

AE-1009

B.A. Private (Part - I)
Term End Examination, 2016-17

SANSKRIT LITERATURE

Paper - II

गद्य, कथा एवं साहित्येतिहास

Time : Three Hours]

[Maximum Marks : 75

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के अंक उनके दाहिनी ओर अंकित हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर सुवाच्य अक्षरों में दीजिए।

इकाई-I

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2

(क) यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुत्पादयति बुद्धिः। अनुज्ञितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः। अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिर। तिर्यग्मात्मेच्छया यौवन समपे पुरुषःप्रकृति।

(2)

- (ख) आलोकयतु तावकल्याणामिनिवेशी लक्ष्मीमेव
प्रथमम्। इयं हि खड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रम भ्रमरी
लक्ष्मीः क्षीरसागरात्पारिजात पल्लवेभ्यो रागम्।
इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम्, उच्चैः
भ्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहनशक्तिम्।
- (ग) गङ्गेव वसुजनन्यपि तरंगबुद्बुदचंचला। दिवसकर
गतिरिवप्रकटितविविध संक्रान्तिः। पातालगुहेव
तमो बहुला। हिमम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया।
प्रवृद्धिवाचिरधुति- कारिणी। दुष्टविचाराचीव
दर्शितानेकपुरुषोच्छाया स्वल्पसत्त्वमुन्मत्ती
करोति। सरस्वती परिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति।
- (घ) अपरेतु स्वार्थ निष्पादनपरैर्धनपिशितग्रासगृ
ध्ररौस्थाननलिनी घूर्तबकैधूतं विनोद इति,
परदारागमनम् वैदग्धमिति, मृगया भ्रम इति, पानं
विलास इति अप्रमत्ततां शौर्यमिति स्वदार-
परित्यागमव्यसनितेति। गुरुवचनावधी
रणमपरप्रयेणत्वमिति, अजितभृत्यनां
सुखोपसेव्यत्वमिति।

इकाई-II

2. किन्हीं दो श्लोकों की सन्दर्भ सहित व्याख्या
कीजिए :

- (क) विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति घनाद्धर्मः ततः सुखम्॥

20

(3)

(ख) आयुः कर्म च विन्तं च विद्या निधमेव च।

पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्त्वैव देहिनः ॥

(ग) मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत।

आत्मवत्सर्वभूतेषु मः पश्यति सः पण्डितः ॥

इकाई-III

3. “कादम्बरीरसज्ञानऽहारोऽपि न रोचते।” इस कथन की सार्थकता लिखिए। 10

अथवा

हितोपदेश की वर्तमान उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए।

इकाई-IV

4. संस्कृत नाटकों के उत्पत्ति एवं विकाश पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

सर्वश्रेष्ठ नाटककार कालिदास के नाट्य-तत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

इकाई-V

5. निम्नलिखित महाकवियों में से किन्हीं दो का प्रमुख परिचय दीजिए : 10

(क) कालिदास

(4)

(ख) महाकवि हर्ष

(ग) अम्बिकादत्त व्यास

(घ) भारवि
